III. राष्ट्रीय जीवन में शिक्षा के कार्य (Functions of Education in National Life)

जिस देश के लोग शिक्षित होते हैं वही देश विकसित देश बन सकता है और यही कारण है कि हम आज भी अपने देश में 100 प्रतिशत साक्षरता प्राप्त करने में संलग्न हैं। राष्ट्रीय जीवन तभी विकसित होगा जब उसमें रहने वाले लोग शिक्षित होंगे। राष्ट्रीय जीवन में शिक्षा के कार्य निम्नलिखित हैं—

1. नेतृत्व के लिए प्रशिक्षण (Training for Leadership)—प्रजातंत्र में सभी व्यक्तियों को नेतृत्व के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। इसके लिए उनमें अच्छी एवं कुशल नेतृत्व क्षमता का होना आवश्यक है। शिक्षा द्वारा साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा खेलकूद सम्बन्धी गतिविधियों के आयोजन तथा अनुशासन बनाए रखने के सन्दर्भ में बालकों को अपने समूह के नेतृत्व का प्रशिक्षण प्राप्त होता रहता है। यह प्रशिक्षण उन्हें भविष्य में अवसर मिलने पर देश को विभिन्न क्षेत्रों—सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, कलात्मक, औद्योगिक, नैतिक आदि में कुशल एवं योग्य नेतृत्व प्रदान करने में सहायता करता है।

2. मानव-शक्ति का विकास (Development of Manpower)—मानव शक्ति एक ऐसा संसाधन है जो देश के आर्थिक विकास में सहायक होता है। शिक्षा में विभिन्न व्यवसायों का ज्ञान प्रदान किया जाता है, जिससे मानव शक्ति का विकास होता है और ऐसा करना राष्ट्रीय आत्म-निर्भरता के विकास के लिए एक गारण्टी बन जाता है। जब विद्यार्थी विभिन्न क्षेत्रों में कुशल होंगे तो इसके परिणामस्वरूप राष्ट्रीय धन में वृद्धि होगी।

3. राष्ट्रीय एकीकरण (National Integration)—भारत देश में विविध मत-मतान्तर, वर्ग, जातियाँ, समाज, सम्प्रदाय, भाषाएँ, राजनैतिक दल, राज्य एवं क्षेत्र हैं, जिनको देखकर एकता में विविधता के दर्शन होते हैं। शिक्षा का कार्य राष्ट्रीय तत्वों को प्रोत्साहन देकर राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न करना है। शिक्षा व्यवस्था में अध्यापकों की नियुक्ति, पाठ्य-पुस्तकों की रचना, पाठ्यक्रमों का चयन एवं विविध सांस्कृतिक तथा सामाजिक क्रियाओं का संचालन इस प्रकार किया जाता है कि जातिवाद, आर्थिक विषमता, धर्मवाद, वर्गभेद और साम्प्रदायिकता आदि अराष्ट्रीय तत्व जो राष्ट्रीय एकता में बाधक हैं विकसित न होने पाएँ। डॉ. राधाकृष्णन् ने ठीक ही कहा है, "यदि भारत ने स्वतन्त्र, संगठित तथा प्रजातांत्रिक रहना है तो शिक्षा द्वारा लोगों को स्थानीयवाद के लिए नहीं एकता के लिए और तानाशाही के लिए नहीं प्रजातंत्र के लिए प्रशिक्षित करें।" ("If India is to remain free, united and democratic, education should train people for unity and not location, for democracy and not dictatorship.") इस प्रकार शिक्षा का कार्य है विविधताओं को एकता के सूत्र में बाँधकर शान्ति का वातावरण तैयार करना।

4. राष्ट्रीय विकास (National Development)—शिक्षा तथा राष्ट्रीय विकास अन्त: सम्बन्धित तथा आत्म-निर्भर हैं। शिक्षा राष्ट्रीय विकास का मूल आधार है। शिक्षा राष्ट्रीय विकास के लिए रीढ़ की हड्डी के रूप में कार्य करती है। राष्ट्रीय पुन:निर्माण के महान् उद्यम में हमारी सफलता शिक्षा संस्थाओं से निकले हुए व्यक्तियों की संख्या तथा गुणवत्ता पर निर्भर करती है। शिक्षा का कार्य है देश को उचित तथा सही दिशा में विकसित करना। **डॉ. ऐलिया** (Dr. Ellia) ने ठीक ही कहा है, "शिक्षा तथा प्रशिक्षण केवल व्यक्ति की

Scanned with CamScanner

व्यक्तिनिष्ठ विचारधारा से ही महत्वपूर्ण नहीं है अपितु यह राष्ट्र के विकास को बढ़ावा देने की विचारधारा से भी महत्वपूर्ण है।" ("Education and training are of primary importance not only from subjective point of view of individual but also from the standpoint of accelerating the growth of a nation.")

5. कर्त्तव्यों के प्रति चेतना (Consciousness towards Duties)—आज अधिकतर मनुष्य अपने अधिकारों का तो ज्ञान रखते हैं परन्तु अपने कर्त्तव्यों से विमुख हो जाते हैं। शिक्षा का कार्य उन्हें अपने कर्त्तव्यों व उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूक करना है। यदि एक राष्ट्र अपनी उन्नति चाहता है तो यह आवश्यक है कि वहाँ के नागरिकों को अपने कर्त्तव्यों का ज्ञान हो।

6. शोषण के प्रति जागरूकता विकसित करना (Evokes Consciousness towards Exploitation)—जब तक अमीर द्वारा गरीब का शोषण किया जाता रहेगा, तब तक उपयुक्त ढंग से राष्ट्रीय विकास नहीं हो सकता। इस शोषण के विरुद्ध आवाज उठाना आवश्यक है। शिक्षा का कार्य व्यक्तियों में शोषण के विरुद्ध जागरूकता का विकास करना है। केवल शिक्षा द्वारा ही सामाजिक, मानसिक तथा आर्थिक शोषण को रोका जा सकता है।

7. भावात्मक एकता (Emotional Integration)—राष्ट्र में भावात्मक एकता का लाना तभी सम्भव है जब राष्ट्रवासियों में राष्ट्र के प्रति प्रेम और श्रद्धा के भाव उत्पन्न हों। राष्ट्र के प्रति प्रेम तथा आस्था तभी उत्पन्न की जा सकती है जब भारतीय नागरिकों को अपनी संस्कृति पर गर्व हो, भौगोलिक संरचना तथा सुरक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न हो। भौगोलिक एवं ऐतिहासिक परिचय देने का कार्य सुनियोजित शिक्षा ही कर सकती है। शिक्षा द्वारा लोगों में मानवता के प्रति प्रेम विकसित किया जाता है।

8. सामाजिक कुशलता (Social Efficiency)—सामाजिक रूप से एक कुशल व्यक्ति वही है जो आत्म-निर्भर है तथा दूसरों की आय पर निर्भर नहीं है। ऐसा व्यक्ति दूसरों की क्रियाओं में दखल नहीं देता परन्तु सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देने में सहायता करता है। शिक्षा सामाजिक तौर पर कुशल व्यक्ति तभी पैदा कर सकती है जब विद्यार्थियों को इस प्रकार के शिल्पों तथा व्यवसायों का प्रशिक्षण दिया जाए जो समाज तथा राष्ट्र के लिए लाभकारी हों।

इस प्रकार राष्ट्रीय जीवन के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण कार्य करती है। लोगों के दृष्टिकोणों एवं व्यवहार प्रवृत्तियों में परिवर्तन करती है। इसीलिए राष्ट्र शिक्षा का संगठन करता है और शैक्षिक संस्थाएँ खोलता है जिससे अपने नागरिकों में ज्ञान, कौशल, विश्वास, आशाएँ, उचित दृष्टिकोण आदि विकसित किया जा सके। राष्ट्र का भविष्य तब तक अन्धकारमय रहेगा जब तक लोगों का एक उच्च राष्ट्रीय चरित्र विकसित नहीं होगा।

Scanned with CamScanner